



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 102-106

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

आचार्य राहुल पन्त

सहायक प्राध्यापक,

संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग,

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,

हल्द्वानी

डॉ नीरज कुमार जोशी

सहायक प्राध्यापक,

संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग,

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,

हल्द्वानी

Correspondence:

आचार्य राहुल पन्त

सहायक प्राध्यापक,

संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग,

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,

हल्द्वानी

आधुनिक समाज में वाल्मीकि रामायण : मानवीय मूल्यों, सामाजिक समरसता एवं जीवन-दृष्टि का पुनर्पाठ

आचार्य राहुल पन्त , डॉ नीरज कुमार जोशी

सारांश-

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं जीवन-मूल्यों का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह केवल धार्मिक आख्यान अथवा महाकाव्य मात्र नहीं, बल्कि मानवीय जीवन के विविध पक्षों, नैतिक आदर्शों, सामाजिक दायित्वों तथा आदर्श जीवन-दृष्टि का व्यापक प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ है। आधुनिक समाज तीव्र तकनीकी विकास, बदलती सामाजिक संरचनाओं, भौतिकतावादी प्रवृत्तियों तथा बढ़ती व्यक्तिवादी मानसिकता के दौर से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में वाल्मीकि रामायण में निहित मानवीय एवं नैतिक मूल्य आज भी व्यक्ति और समाज के लिए अत्यन्त प्रासंगिक एवं मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

रामायण में सत्य, धर्म एवं कर्तव्यनिष्ठा, त्याग एवं समर्पण, सहनशीलता एवं धैर्य, मित्रता एवं निष्ठा, करुणा एवं मानवीय संवेदना तथा परिवार और समाज के प्रति उत्तरदायित्व जैसे अनेक जीवन-मूल्यों का प्रभावशाली निरूपण हुआ है। इसके पात्रों के माध्यम से व्यक्तिगत आचरण से लेकर सामाजिक उत्तरदायित्व तक की विभिन्न अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है। राम के चरित्र में मर्यादा, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यपरायणता, सीता में धैर्य, त्याग और आत्मसम्मान, लक्ष्मण में सेवा एवं समर्पण, भरत में भ्रातृप्रेम और त्याग तथा हनुमान में निष्ठा, समर्पण और सेवाभाव जैसे आदर्श मूल्य अभिव्यक्त होते हैं।

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वाल्मीकि रामायण का पुनर्पाठ केवल अतीत के आदर्शों की पुनरावृत्ति नहीं, अपितु समकालीन जीवन की समस्याओं के संदर्भ में मानवीय मूल्यों की पुनर्व्याख्या भी है। यह व्यक्ति को अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति सजग करता है तथा परिवार, समाज और व्यापक मानव समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है। अतः वाल्मीकि रामायण की जीवन-दृष्टि आधुनिक समाज में नैतिक चेतना, सामाजिक समरसता, मानवीय संवेदनशीलता तथा उत्तरदायी नागरिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस दृष्टि से रामायण न केवल भारतीय परम्परा का अमूल्य ग्रन्थ है, अपितु सार्वकालिक मानवीय मूल्यों को प्रतिपादित करने वाला विश्व का एक आदर्श महाकाव्य भी है।

कूटशब्द- ऋषि, हस्तामलकवत्, आर्ष काव्य, परक्रिया, पुराकल्प, पुञ्जीभूत विग्रह, अग्निशिखा, मार्गदर्शक, मनस्विनी, कृतज्ञ

मूल आलेख-

संस्कृत साहित्य में महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण' को आदिकाव्य माना जाता है और महर्षि वाल्मीकि आदिकवि के रूप में समादृत हैं। यद्यपि वैदिक साहित्य की रचना रामायण से पूर्व हो चुकी थी, पर लौकिक संस्कृत या लोकभाषा में रची प्रथम कृति होने से रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा में रामायण तथा महाभारत इन दोनों ग्रन्थों को इतिहास, आख्यान, उपजीव्य काव्य, आर्ष काव्य भी कहा जाता है।

इतिहास से तात्पर्य यह है कि जो होता आया है, और होता रह सकता है, उसका निरूपण। महर्षि की रामायण तथा महर्षि व्यास के महाभारत से हम वह सब जानते हैं, जो इस देश में होता आया है और भविष्य में भी होता रह सकता है।¹ अतः इन दोनों ग्रन्थों को इतिहास कहा गया है। आचार्य राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इतिहास दो प्रकार का माना है-

परक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा।

स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीय बहुनायका॥²

इतिहास की प्रगति दो प्रकार की होती है। एक का नाम परक्रिया और दूसरी का नाम पुराकल्प। एक नायक के आधार पर रचित इतिहास परक्रिया कहा जाता है और अनेक नायकों के आधार पर निर्मित इतिहास पुराकल्प कहा जाता है। पहले का उदाहरण राजशेखर के अनुसार रामायण है, दूसरे का महाभारत। रामायण एवं महाभारत को उपजीव्य काव्य भी कहा जाता है। उपजीव्य काव्य अर्थात् ऐसी रचना जिससे दीर्घकाल तक परवर्ती साहित्यकार प्रेरणा पाते रहें हैं। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में रामायण तथा महाभारत दोनों को आर्ष काव्य के रूप में परिभाषित किया है। ऋषि के द्वारा प्रणीत काव्य आर्ष काव्य है। ऋषि दृष्टा होता है, वह भूत, भविष्य और वर्तमान की सारी घटनाओं को अपनी प्रतिभा से हस्तामलकवत् देख सकता है।³ वाल्मीकि रामायण को चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता भी कहा गया है, इस महाकाव्य को २४००० श्लोकों, पाँच सौ सर्गों तथा सात कण्डों में निबद्ध किया गया है।

वाल्मीकि रामायण में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और आदर्श जीवन की समग्रताओं का समावेश है। यह आचार-विचार, संस्कारों-सम्बन्धों, भक्ति-भावना, मैत्री-भावना और आदर्श उदात्तता का प्रतिनिधि ग्रन्थ रत्न है।⁴ रामायण मनुष्य जीवन को ओजस्वी तथा उदात्त बनाने के लिए एक अद्भुत कृति है, यह मनुष्य के समक्ष उच्च नैतिक स्तर तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक उदात्त भावना को अभिव्यक्त करता है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के चरित्र को समस्त आदर्शों के पुञ्जीभूत विग्रह के रूप में प्रस्तुत किया है।⁵ श्रीराम का चरित्र सम्पूर्ण गुणों से युक्त है-

स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः।

समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिवा॥⁶

श्रीराम के चरित्र में समुद्र के समान गाम्भीर्य और हिमालय के समान धैर्य है। वे सहिष्णुता, स्नेह, त्याग, शौर्य आदि गुणों से युक्त हैं। श्रीराम संकट के समय में धैर्य और विवेक का प्रदर्शन करते हैं। ऐसे ही गुणों से युक्त मनुष्य का व्यक्तित्व समाज में भव्यता से सम्पन्न बनता है। “रामो द्विर्नाभिभाषते”⁷ श्रीराम कभी दो तरह की बातें नहीं करते। श्रीराम की पत्नी पराम्बा भगवती माता सीता शुभ लक्षणों से विभूषित हैं-“सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा बधूः”⁸ समस्त शुभलक्षणों से विभूषित माता सीता स्त्रियों में उत्तम बधू हैं। माता सीता परम पतिव्रता नारी हैं। वे श्रीराम के साथ वन जाती हैं। घोर वन में जाकर पति के साथ कष्ट उठाना उन्हें प्रिय लगता है। माता सीता अपने पति के साथ इस तरह वन चली, जैसे चन्द्रमा के पीछे

रोहणी चलती है- “सीताप्यनुगता रामं शशिनं रोहणी यथा”⁹ वे सदा पति का हित चाहने वाली हैं। महर्षि वेदव्यास श्रीमद्भागवत महापुराण में लिखते हैं-

प्रेम्णानुवृत्त्या शीलेन प्रश्रयावनता सती।

धिया हिया च भावज्ञा भर्तुः सीताहरन्मनः॥¹⁰

सती शिरोमणि सीता जी अपने पति के हृदय का भाव जानती रहती हैं, वे प्रेम से, सेवा से, शील से, अत्यन्त विनय से तथा बुद्धि और लज्जा आदि गुणों से अपने पति श्रीराम का चित्त चुराती रहती थीं। श्रीराम के सम्मान की रक्षा तथा राज्य एवं प्रजा के मंगल के लिए माता सीता ने अनेक कष्ट उठाये हैं। वे श्रीराम की ही भान्ति प्रजा के कल्याण का चिन्तन करती हैं। माता सीता समग्र मनुष्यता का प्रतीक हैं। यद्यपि श्रीराम आदर्श मनुष्य के प्रतिमान के रूप में उपस्थित होते हैं, तथापि वे पुरुष हैं; इसलिए नियति के दारुण संकट के क्षणों में वे तर्क और ऊहापोह में पड़ जाते हैं। दूसरी ओर माता सीता नारी हैं, जो दारुण संकट के क्षणों में हृदय की अनुभूति तथा अपनी संवेदना से प्रेरित होती हैं। तर्क और ऊहापोह के घटाटोप में हृदय की अनुभूति और संवेदना की हत्या न हो, यही वाल्मीकि रामायण की आंतरिक पुकार है। वाल्मीकि रामायण का अंतःस्वर हर स्थिति में मनुष्यत्व के मूल भाव की रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है।

भ्राता लक्ष्मण आदर्श भाई की भूमिका को दर्शाते हैं। वन में रहकर अपने भाई श्रीराम की सेवा करना ही उनका धर्म है। लक्ष्मण आदर्श भाई के साथ-साथ एक देवर का परम आदर्श भी समाज में स्थापित करते हैं।¹¹ जब श्रीराम लक्ष्मण से माता सीता के आभूषण पहचानने को कहते हैं तो लक्ष्मण केवल नूपुर पहचानते हैं-

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।

नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥¹²

माता सीता के चरणों में नित्य वन्दन करने के कारण लक्ष्मण ने नूपुर पहचाने। चरण के अतिरिक्त अन्य अंगों का देवर लक्ष्मण ने दर्शन ही नहीं किया है। अतः केयूर और कुण्डल उन्हें ज्ञात नहीं है। माता सीता के मुखमण्डल का अवलोकन न करना यह एक आदर्श देवर का चरित्र है। रामायण में पारिवारिक, सामाजिक सभी दायित्वों का उदात्त चित्रण है। पुत्र का पिता के प्रति, भाई का भाई के प्रति, पति का पत्नी के प्रति, माता-पिता का पुत्र के प्रति, देवर का भाभी के प्रति तथा सभी का समाज के प्रति क्या कर्तव्य हो सकता है, यह सब महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में प्रतिपादित किया है।¹³ इसीलिए रामायण विश्व का आदर्श काव्य है।

रामायण में गौतम की पत्नी अहल्या से चूक हो गयी थी। इन्द्र कपट से गौतम का वेश धारण कर अहल्या के पास आया, उसको को छुआ, समागम हुआ। अहल्या से थोड़ी चूक हो गयी थी। गौतम ने जब यह सब जाना तो रोष में आकर उन्होंने इन्द्र को शाप दिया। अहल्या को शाप दिया कि तू भी यहाँ इसी वन में कई वर्षों तक अकेले ही रहेगी, कोई भी मनुष्य तेरे पास नहीं आयेगा। “अदृश्या सर्वभूताना-माश्रमेऽस्मिन् वसिष्यामि”¹⁴ समस्त प्राणियों से अदृश्य रहकर इस आश्रम में निवास करेगी। अहल्या घोर वन में अकेले कई वर्षों तक रहती है। कोई भी मनुष्य उसके पास नहीं आता, न ही वो किसी से मिलती उस भयानक वन में वो अकेली रहती थी। जब श्रीराम ऋषि

विश्वामित्र के साथ उस वन में आये, तो उन्होंने पूछा- यह कैसा आश्रम है? जिसमें कोई भी ऋषि मुनि नहीं दुखाई दे रहे हैं? तब विश्वामित्र ने उन्हें अहल्या के बारे में बताया। विश्वामित्र ने कहा श्रीराम इस आश्रम में अहल्या अकेले ही निवास करती है। वे उपेक्षित नारी है। गौतम ऋषि के शाप के कारण यहाँ कोई नहीं आता। अहल्या के बारे में सब कुछ जानने के बाद श्रीराम उस आश्रम में जाते हैं, वहाँ जाकर उन्होंने देखा महासौभाग्यशालिनी अहल्या अपनी तपस्या से देदीप्यमान हो रही है, उनका स्वरूप दिव्य था। “धूमेनाभिपरीतांगी दीप्तामग्निशिखामिव”¹⁵ धूम से घिरी हुई प्रज्वलित अग्निशिखा सी जान पड़ती थीं। श्रीराम और लक्ष्मण ने अहल्या के दोनों चरणों का स्पर्श किया। अहल्या ने दोनों भाईयों का आदरणीय अतिथि के रूप में आतिथ्य सत्कार किया। श्रीराम ने कहा माता अब महर्षि गौतम आपके पास आयेंगे। उसके बाद महर्षि गौतम ही अहल्या के पास आते हैं, और अहल्या को अपने साथ पाकर सुखी हो गये। श्रीराम किसी में दोष का दर्शन नहीं करते। वे सबको साथ लेकर चलने की प्रेरणा देते हैं। समान भाव से वे सबको देखते हैं। स्त्रियों के प्रति मातृभाव रखने की प्रेरणा वे समाज को देते हैं। स्त्री सम्मान की रक्षा कैसे की जाती है? यह श्रीराम समाज को सिखाते हैं। किसी का तिरस्कार या उपेक्षा उन्हें सहन नहीं होता। जब रावण ने विभीषण का अपमान कर तिरस्कृत किया, तो श्रीराम ने विभीषण को शरण प्रदान की।

मित्रभावेन सम्प्राप्तं न त्यजेयं कथंचन।

दोषो यद्यपि तस्य स्यात् सतामेतदगर्हितम्॥¹⁶

श्रीराम कहते हैं- जो व्यक्ति मित्रभाव से मेरे पास आया है, उसे मैं किसी भी परिस्थिति में नहीं छोड़ूँगा। भले ही उसमें कोई दोष क्यों न हो, सज्जन पुरुषों के लिए मित्रता निभाना और शरण में आए व्यक्ति का त्याग न करना निन्दनीय नहीं, अपितु प्रशंसनीय है। श्रीराम के द्वारा यह मित्रता, उदारता और सज्जनता का स्पष्ट संदेश दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति सच्चे मित्रभाव से हमारे पास आता है, तो उसके किसी दोष या कमी के कारण उसका साथ छोड़ देना उचित नहीं है। अच्छे और उदार व्यक्ति वही हैं जो अपने सम्बन्धों को कठिन परिस्थितियों में भी निभाते हैं और मित्र के दोषों को देखकर भी उसे त्यागते नहीं। विभीषण को शरण प्रदान करना श्रीराम के दृढनिश्चय तथा मानवीय सहज संवेदना को प्रमाणित करता है। श्रीराम सबके हित का चिन्तन करते हुए सबके साथ मित्रता का व्यवहार करते हैं। रामायण में श्रीराम यदि दिव्य गुणों से युक्त हैं, तो हनुमानजी में मात्र बल और पराक्रम का ही नहीं, अपितु मनुष्य के सम्पूर्ण विवेक का दर्शन होता है।¹⁷ उनके सम्मान में सुग्रीव कहते हैं-

त्वय्येव हनुमन्नस्ति बलं बुद्धिः पराक्रमः।

देशकालानुवृत्तिश्च नयश्च नयपण्डितः॥¹⁸

हनुमानजी! तुम नीतिशास्त्र के पण्डित हो, एकमात्र तुम्हीं बल, बुद्धि, पराक्रम, देश और काल के अनुसार चलने की समझ तथा नीतिपूर्ण बर्ताव यह सब एक साथ तुम्हीं में देखे जा सकते हैं। सुग्रीव के वचन सुनकर श्रीराम को लगा ये हनुमानजी के ही भरोसे रहते हैं, अर्थात् हनुमानजी ही इनके सबसे विश्वास पात्र हैं और जिस कार्य को इन्हें

कहा जाता है वे उसे निश्चित ही सम्पन्न करते हैं। बल, बुद्धि, विवेक, ज्ञान, पराक्रम आदि से युक्त होने पर भी हनुमानजी का स्वभाव अत्यन्त विनम्र है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में हनुमान जी को एक उत्कृष्ट भाषाविद् और बहुभाषाज्ञानी के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके पावन चरित्र द्वारा उन्होंने यह शाश्वत सत्य स्थापित किया है कि व्यक्ति का भाषाई व्यवहार ही उसके व्यक्तित्व और पहचान का दर्पण है। जब श्रीराम और लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत से जाते हैं तो उनको दूर से देखकर सुग्रीव भयाकुल हो जाता है, और हनुमान जी को पता लगाने के लिए भेजता है कि ये दोनों कौन हैं? हनुमान जी एक ब्राह्मण के वेश में श्रीराम और लक्ष्मण के समीप आकर उनसे शिष्टतापूर्वक वार्तालाप करते हैं। हनुमान जी की भाषा को सुनकर श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं-

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।

बहु व्याहरताग्नेन न किञ्चिदपशब्दिम्॥¹⁹

निश्चय ही इन्होंने व्याकरण शास्त्र को कई बार सुना और गुना है, बहुत देर से ये बातें कर रहे हैं फिर भी इन्होंने एक भी शब्द अशुद्ध नहीं बोला। हनुमान जी बहुभाषाविद् और भाषा के प्रकांड विद्वान हैं। उनके चरित्र से महर्षि वाल्मीकि ने यह संदेश दिया है कि मनुष्य की वास्तविक पहचान उसकी भाषा से ही तय होती है।

वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में रावण के अन्तः पुर का चित्र है। रावण की विलासशाला में उसके आस-पास सोयी हुई अनेक नारियाँ हैं। उन अनेक सुन्दरियों के उस संक्षिप्त दृश्यखण्ड के बीच खड़े हनुमान जी के मन में विचार आता है- “न हि मे परदाराणां दृष्टिर्विषयवर्तिनी”²⁰ यद्यपि मेरी दृष्टि इन स्त्रियों के प्रति पूर्णतः निष्काम तथा अनासक्त है, तथापि परिस्थिति वश मुझे इन्हें देखना पड़ रहा है। सोती हुई परस्त्रियों के इस समुदाय का निरीक्षण मेरे लिए धर्म की बहुत बड़ी हानि करेगा- इदं खलु ममात्यर्थं धर्मलोपं करिष्यति।²¹ महर्षि वाल्मीकि की दृष्टि में मनुष्यता का स्थान सर्वोपरि है। वे हर कीमत पर मनुष्य की मनुष्य के प्रति आस्था और विश्वास की रक्षा करना चाहते हैं। कुछ ऐसे मूलभूत मानदण्ड हैं, जिन पर मानवता टिकी हुई है और वाल्मीकि रामायण ऐसे ही जीवनमूल्यों की पक्षधर है।

रामायण में कैकेयी गम्भीर एवं मनस्विनी नारी है। पर हर नारी के भीतर अपने बेटे को आगे बढ़ाने की कामना छिपी रहती है, मंथरा उसकी कामना को आगे की तरह सुलगा देती है। जो कैकेयी श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर प्रसन्न हो जाती है, वही कैकेयी कुछ ही क्षणों में मंथरा के बहकावे में इस तरह आ जाती है कि वही मंथरा उसे परम बुद्धिमान्, सुन्दर और प्रिय लगने लगती है, तथा वह जी भर कर मंथरा की प्रशंसा करती है। कैकेयी की इस प्रशंसा को हास्यपद बनाकर महर्षि वाल्मीकि ने मनुष्य मन की विचित्र गति पर सूक्ष्म व्यंग्य किया है।²² समाज में हो रही गतिविधियों से मनुष्य का मन विचलित होता रहता है। ऐसी अवस्था में रामायण मनुष्य को धैर्य एवं शान्त रहने की प्रेरणा देती है। रामायण में भरत के चरित्र को महर्षि वाल्मीकि ने त्याग, विनय और स्नेह से युक्त आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। मनुष्य की गरिमा की रक्षा कैसे की जाये? यह भरत के चरित्र से ज्ञात होता है। जब भरत वन में श्रीराम से मिलते हैं तो कहते हैं-

यः संसदि प्रकृतिभिर्भवेद् युक्त उपासितुम्।

वन्यैर्मृगैरूपासीनः सोऽयमास्ते ममाग्रजः॥²³

जो श्रीराम राज सभा में बैठकर प्रजा और मंत्री वर्ग के द्वारा सेवा तथा सम्मान प्राप्त करने योग्य हैं, वे मेरे ज्येष्ठ भ्राता यहाँ जंगली पशुओं से घिरे वन में कष्ट भोग रहे हैं। भरत की अपने ज्येष्ठ भ्राता के प्रति प्रेम और सम्मान इतना है कि वह श्रीराम की इस दशा को देखकर स्वयं को धिक्कारते हैं- हाय! जो सर्वथा सुख भोगने के योग्य हैं, वे श्रीराम मेरे ही कारण इन दुखों में पड़ गये हैं। “ध्विजीवितं नृशंसस्य मम लोकविगर्हितम्”²⁴ भरत स्वयं को क्रूर मानते हैं और अपने जीवन को लोकनिन्दित मानकर धिक्कारते हैं। भरत धर्मात्मा हैं उनको धर्म एवं अधर्म का ज्ञान भली-भांति है। भरत का चरित समाज में मनुष्य की गरिमा की रक्षा करने की प्रेरणा देता रहा है, उन्होंने अपने सुखों का त्याग कर, चौदह वर्षों तक तपमयी जीवन व्यतीत किया और अयोध्या राज्य का कार्य-भार को सुव्यवस्थित ढंग से नियोजित किया। श्रीराम के वनवास के पश्चात् अयोध्या आने पर उनका राज्य उन्हें सौंप दिया। भरत का चरित समाज में त्याग, विनय, नैतिकता, विश्वास, कर्तव्यनिष्ठता, भ्रातृ प्रेम का अप्रतिम है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के पात्रों द्वारा मानव जीवन के गौरवशाली रूप को सामने रखा है। इन भव्य और गरिमापूर्ण चरित्रों के बीच रावण का स्थान सबसे आगे है। अपने शौर्य, तेज, पांडित्य, बुद्धिमत्ता और उग्र स्वभाव के कारण रामायण का रावण अत्यंत महान प्रतीत होता है। मन्त्री सुपाश्र्व कहते हैं- “वेदविद्याव्रतस्नातः स्वकर्मनिरतस्तथा”²⁵ हे राक्षसेश्वर रावण, आप वेद विद्या के व्रत के स्नातक हैं, अपने कर्तव्य में निरंतर लगे रहने वाले हैं। युद्ध में अपने पुत्रों, पौत्रों, भाई-बंधुओं और सहायकों को खोने के बाद भी, अंतिम समय तक रणभूमि में वीरता से लड़ता हुआ रावण जब युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त होता है, तब विभीषण विलाप करते हुए कहते हैं- “गतः सेतुं सुनीतिनां गतो धर्मस्य विग्रहः”²⁶ आज नीतिवानों का सेतु, धर्म का साकार रूप तथा सत्व का स्वरूप ही चला गया। वीरों का सहारा अब नहीं रहा। जब विभीषण शोक में डूब जाते हैं, तब श्रीराम उन्हें सांत्वना देते हुए रावण के महान गुणों की सराहना करते हैं और अंततः कहते हैं कि मृत्यु के पश्चात् सारा वैर समाप्त हो जाता है, इसलिए यह रावण जैसे तुम्हारा भाई था, वैसे ही अब मेरा भी भाई है।

आधुनिक समाज में मनुष्य को वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और तकनीकी विकास के बीच नैतिक मूल्यों के संकट का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति के सामने आने पर रामायण नीतिवाक्यों, सुभाषितों तथा राजनीतिपरक तथ्यों के माध्यम से मार्गदर्शन कराती है। सुग्रीव के विषय में श्रीराम की उक्ति है-

कृतार्था ह्यकृतार्थानां मित्राणां न भवन्ति ये।

तान् मृतानपि क्रव्यादाः कृतघ्नान् नोपभुञ्जते॥²⁷

जो मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर, जिन मित्रों के कार्य पूरे नहीं हुए हैं। उन मित्रों की साह्यता नहीं करते, उनके सहायक नहीं होते, उनके कार्य सिद्ध करने के इच्छा नहीं करते, ऐसे कृतघ्न मनुष्यों के मरने पर मांसाहारी जन्तु भी उनका मांस नहीं खाते हैं। एक मित्र को अपने मित्र का किस प्रकार से सहयोग करना चाहिये, यह श्रीराम

और सुग्रीव की मित्रता से देखा जा सकता है। सुग्रीव के दुःख को देखकर श्रीराम अपना ही दुःख भूल गये, यही मित्रता का सार्थक स्वरूप है। मित्रता में स्वार्थ तृण मात्र भी नहीं होना चाहिये। इस प्रकार के नैतिक सिद्धान्त श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता में देखे जा सकते हैं।

रावण को पक्षिराज जटायु नीति का बोध करवाते हैं, वे कहते हैं- “कथं राजा स्थितो धर्मे परदारान् परामृशेत्”²⁸ अर्थात् धर्म में स्थित राजा परायी स्त्री को कैसे स्पर्श कर सकता है। राजा तो धर्म, और प्रजा की रक्षा करता है, वह प्रजा का भक्षक कैसे बन सकता है? वह ऐसा अधर्म का कार्य भला कैसे कर सकता है? रावण से माता सीता की रक्षा करते-करते जटायु घायल हो जाते हैं। जब श्रीराम उनके पास आते हैं, जटायु उनको पूरी घटना सुनाते हैं कि जिस देवी को आप खोज रहे हैं उन्हें रावण हरण कर लिया है। उसने मेरे प्राण भी हर लिए हैं, मैं देवी सीता को उस दुष्ट से नहीं छुड़ा पाया। नारी के सम्मान की रक्षा करते हुए जिन जटायु ने अपने प्राणों की भी प्रवाह न की, उनको श्रीराम ने हृदय से लगा दिया। ऐसे उपकारी गृधराज जटायु के प्रति श्रीराम का मन कृतज्ञता से भर जाता है। उनके मुख से यह बात निकलती है- “हे लक्ष्मण, देवी सीता के हरण का मुझे उतना दुःख नहीं है, जितना मेरे लिए जटायु का देहत्याग कष्टकर हो रहा है।” इस प्रकार के वचन कृतज्ञ श्रीराम के ही मुख से निकल सकते हैं और यही श्रीराम का रामत्व है।²⁹ श्रीराम दूसरे के दुखों को देखकर अपना दुःख भूल जाते हैं, कृतज्ञता, सहृदयता, आत्मीयता जैसे अनेक गुणों से वे परिपूर्ण हैं, श्रीराम के इन गुणों का अनुसन्धान मनुष्य अपने जीवन में करके अपने जीवन को धन्यता से मण्डित कर सकता है।

श्रीराम प्रजा की रक्षा करते हैं। प्रजा के मत का वे सदैव सम्मान करते हैं। प्रजा की आकांक्षाओं और सपनों को उन्होंने पूर्ण किया है। प्रजा की हितों के लिए उन्होंने बड़े से बड़े त्याग किये हैं। श्रीराम और रावण के चरित्र में यही अन्तर है। रावण ज्ञानी है, शिव का परम भक्त है, नीतिज्ञ है, विद्वान् है, प्रतापी है, लेकिन रावण एक अभिमानी, अहंकारी शासक है। रावण डर तथा आतंक के द्वारा शासन करता है। रावण अपने उपनिवेश स्थापित करता है। जहाँ-जहाँ वह युद्ध में विजय प्राप्त करता है उन राज्यों को ध्वस्त कर देता है, नष्ट कर देता है, क्रूर तथा निर्दयता से भरा हुआ है। श्रीराम उपनिवेशवादी नहीं हैं। वे बाली को युद्ध में मार देते हैं और बाली के भाई सुग्रीव को राज्य दे देते हैं, लंका में भी रावण पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् लंका का राज्य विभीषण को सौंपा, उपनिवेशवाद के प्रति यह श्रीराम का स्पष्ट संदेश कहा जा सकता है।³⁰ महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में समाज में व्याप्त विकृतियों और कमियों को सूक्ष्मता से देखकर उनका चित्रण किया है। वे हमें श्रीराम, हनुमानजी, भरत, लक्ष्मण, आदि जैसे आदर्श चरित्रों से यह बताते हैं कि समाज में व्याप्त बुराइयों से कैसे बचा जाये। महर्षि वाल्मीकि के सम्मान में राजा भोज ने कहा है-

“मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिः”³¹ महर्षि वाल्मीकि मधुर उक्तियों के मार्गदर्शक हैं। महर्षि वाल्मीकि ने अपनी ऋषि दृष्टि से जीवन के मर्म का उद्घाटन किया है, उन्होंने मानव-हृदय के सभी पक्षों का वर्णन किया है। आज भी समाज में भारतीय संस्कार से युक्त व्यक्ति को जीवन के सभी स्तरों में दिशा-निर्देश रामायण से प्राप्त होता है।

निष्कर्ष-

वाल्मीकि रामायण आज के आधुनिक समाज के लिए नैतिक मूल्यों का मार्गदर्शक है, यह समाज को जीवन उच्च नैतिक मानकों के अनुसार जीने की प्रेरणा देता रहा है। रामायण में वर्णित नैतिक मूल्य और सिद्धान्त आज के आधुनिक जीवन में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने वे पूर्व में थे। यदि मनुष्य इन नैतिक मूल्यों को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में धारण करने लगेंगे, तो आधुनिक समाज में नैतिकता और सदाचार को स्थापित किया जा सकता है। अतः वाल्मीकि रामायण को केवल धार्मिक या पौराणिक ग्रंथ के रूप में देखना उचित नहीं है। यह मानव जीवन के लिए नैतिक और सामाजिक मूल्यों का व्यापक मार्गदर्शक है। यदि व्यक्ति सत्य, धर्म, कर्तव्य, त्याग, प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और परोपकार जैसे मूल्यों को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अपनाए, तो समाज में नैतिकता, सदाचार और मानवीय संवेदनाओं को सुदृढ़ किया जा सकता है। इस प्रकार आधुनिक युग की अनेक नैतिक चुनौतियों का समाधान खोजने में वाल्मीकि रामायण के आदर्श आज भी उतने ही उपयोगी और प्रासंगिक हैं, जितने वे प्राचीन भारतीय समाज में थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास तृतीय खण्ड आर्षकाव्य (रामायण तथा महाभारत), प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, सम्पादक प्रो० भोलाशंकर व्यास, प्रकाशक- उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ- २२६००७
2. संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रकाशक- चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी- २२१००१
3. आदिकवि और उनकी रामायण, लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रकाशक- सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नई दिल्ली-११०००१
4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, लेखक डॉ कपिल देव द्विवेदी, प्रकाशक रामनारायणलाल विजयकुमार २, कटरा रोड इलाहाबाद- २११००२
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास, लेखक डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' प्रकाशक- चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी-२२९००१
6. काव्यमीमांसा, लेखक आचार्य राजशेखर, अनुवादक पण्डित केदारनाथ शर्मा सारस्वत, प्रकाशक-बिहार-राष्ट्रभाषा-भवन, पटना-३
7. वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर- २७३००५
8. श्रीमद्भागवत महापुराण, प्रकाशक- गीताप्रेस, गोरखपुर- २७३००५

पाद टिप्पणी

- 1 संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी पृष्ठ ४३
- 2 काव्यमीमांसा अध्याय २
- 3 संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी पृष्ठ ४४
- 4 संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (तृतीय खण्ड आर्षकाव्य) प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, भूमिका पृष्ठ ८
- 5 संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (तृतीय खण्ड आर्षकाव्य) प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, भूमिका पृष्ठ १०
- 6 रामायण १/१/१७
- 7 रामायण २/१८/३०
- 8 रामायण १/१/२७
- 9 रामायण १/१/२८
- 10 श्रीमद्भागवत महापुराण ९/१०/५६
- 11 संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (तृतीय खण्ड आर्षकाव्य) प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ ५
- 12 रामायण ६/२२/२३
- 13 संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (तृतीय खण्ड आर्षकाव्य) प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ ६
- 14 रामायण १/४८/३०
- 15 रामायण १/४९/१४
- 16 रामायण ६/१८/३
- 17 संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी पृष्ठ ५६
- 18 रामायण ४/४४/७
- 19 रामायण ४/३/२९
- 20 रामायण ५/९/३६
- 21 रामायण ५/९/३५
- 22 संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, लेखक राधावल्लभ त्रिपाठी पृष्ठ ५६
- 23 रामायण २/९९/३१
- 24 रामायण २/९९/३६
- 25 रामायण ६/९२/६४
- 26 रामायण ६/१०९/१६
- 27 रामायण ४/३०/७३
- 28 रामायण ३/५०/६
- 29 संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (तृतीय खण्ड आर्षकाव्य) प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ ६७
- 30 प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी जी के व्याख्यान से <https://youtu.be/ho1WDPVWnw?si=8rt8rdY9hrvWDebz>
- 31 चम्पूरामायण, बालकाण्ड- ८